श्री अमरनाथ जी

भव्य तीर्थाटन १९९९

हेमराज बंसल

सर्वाधिकार सुरक्षित :हेमराज बंसल
PDF Developed by GB LABS

श्री अमरनाथ जी – भव्य तीर्थाटन 1999

प्रस्थान

एक दिन पत्रिका समाचार पत्र में श्री अमरनाथ जी यात्रा का विज्ञापन पढ़ा। मेरे मन में स्वतः ही प्रेरणा जागी। लगातार प्रयास के बाद साथी मिल गये। हास्य क्लब के रवेन्द्र ठैनुंआ तथा अशोक करोल्या। मेरे यात्रा के दो पूर्व साथी प्रेमजी राठौर एवं बजरंगलालजी पारीक। आपसी विचार विमर्श के बाद 16 अगस्त 1999 की स्वराज एक्सप्रेस, जिसे हम जम्मूतवी सुपरफास्ट कहते हैं, में आरक्षण हो गया। बहुत सी बाधायें एवं भय हमारे सामने आये। आतंकवाद एवं कारगिल युद्ध से हमारे परिजन ज्यादा चिन्तित थे पर हम सब अडिग रहे। इस बीच मुझे 23–7–99 से 9–8–99 तक प्रवास पर बम्बई भी जाना पड़ा। इसके बाद तैयारियां जोरशोर से शुरू हुई। 16 अगस्त साढ़े तीन सौ रूपये में किराये की जीप ने हमें हमारे घरों से उठाकर कोटा रेल्वेस्टेशन पर छोड़ा। इसी बीच गत दो–तीन दिन में हमारे तीन साथी और बढ़ गये। चतरसिंह जी जाड़ेजा–पारीक सा. के दफ्तर के पुराने साथी। एन वक्त पर अशोक तनेजा व हंसराज गेरा भी निकल पड़े। खैर बुलाने वाला वह स्वयं है। कुछ पैसे तो लगे पर अतिरिक्त टिकट की समस्या नहीं आई। आराम से सफर कर जम्मू तारीख 17–8–99 मंगलवार सायं 5 बजे पहुंचे।

हमारा नया साथी अशोक तनेजा गत वर्ष ही अमरनाथ यात्रा करके गया था। स्वतः ही हम जम्मू में उसके निर्देशों पर चलने लगे। ऑटो के बजाये मिनीबस में बैठे और बाद में काफी दूर तक सामान उठाकर जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग के कार्यालय पहुंचे। इस पद यात्रा से हम ऊपर से नीचे तक पसीने में नहा गये और मुझे तनेजा पर नाराजगी भी आई। इधर पर्यटन विभाग में कोई भीड़ नहीं थी। डाक्टर के प्रमाणपत्र बनाने एवं हमारा परिचय पत्र लेने में ज्यादा समय नहीं लगा। होटल ढूंढने तनेजा एवं अशोक करोल्या गये। जयपुर गोल्डन के सामने चारचिनार होटल भी हम अपने सामान उठाकर पैदल ही गये। होटल में हमने तीन कमरे खुलवाये। स्नान के बाद हम खाने हेतु बाजार गये। सामने रघुनाथ मंदिर देख पहले दर्शन करना उचित समझा। वहां आरती में हमने बहुत समय दिया। बाद में मंदिर के मुख्य दरवाजे के बाहर के एक होटल पर पसीने से तरबतर होते हुये अव्यवस्थाओं के बीच खाना खाया। खाने के बाद पान व वाड़ीलाल की कुल्फी खाई गई। टहलते हुये होटल आये। सभी साथी एक कमरे में बैठे, आज तक का हिसाब–किताब देखा तथा भविष्य की योजना बनाई।

रात्री में मुझे ज्यादा नींद नहीं आई और डेढ़ बजे तो वस्तुतः मैं जग ही गया। तारीख 18–8–99 बुधवार प्रातः पौने तीन बजे बिस्तर छोड़ा। दूसरे कमरे में तनेजा भी जग गया था। सभी को जगाया और नहा धो हमने चार बजे होटल खाली कर दिया। दो ऑटोरिक्शा वालों को तीस–तीस रूपये देकर हम एम.ए. स्टेडियम पहुंचे। हमने कल ही डीलक्स बस के आठ टिकट ले लिये थे। बस पर हमें ठीक साढ़े चार बजे पहुंचना था। हम बिल्कुल सही समय पर आये। यहां कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की बानगी देखने को मिली। मेटलडिक्टेटर से गुजारने के बावजूद जामा तलाशी ली गई तथा सामानों को खोलकर चेक करने के बाद ही हमें हमारी बसों की ओर स्टेडियम में जाने दिया गया। बस में सामान रख, हमारे साथियों ने वहीं लग रहे विशाल लंगर में चाय पी तथा ट्यूरिस्ट नामक पानी की बोतलें भी मुफ्त ले आये। हमारी बस की अन्य सवारियां देर से आने के कारण बस सवा पांच बजे स्टेडियम छोड़ सकी। सीटों के मामले में गफलत रह जाने के कारण हमें बस में पीछे ही पीछे बैठना पड़ा। दरअसल बड़ी बस समझकर हमने 17 से 24 नम्बर सीट के टिकट ले लिये। यह मात्र 26 सीट वाली मिनी बस निकली। हमें सफर में तकलीफ नहीं हुई।

उधमपुर से पूर्व एक होटल पर 20 मिनट नाश्ते हेतु रुके। साफ मौसम, अबाधित यातायात और अमरनाथ यात्रा हेतु यात्रियों का पड़ा अकाल, रास्ता तुरन्त तय हुआ। साढ़े दस से साढ़े ग्यारह के बीच रामबन में एक लंगर पर सबने खाना खाया। जवाहरटनल से पूर्व हमें पौने दो घंटे रुकना पड़ा। यहां सी.आर.पी.एफ. का लंगर तथा सुरक्षा शिविर था। यहां भी लंगर का प्रसाद सब यात्रियों ने ग्रहण किया। सुरक्षा कारणों से सारे वाहन साढ़े तीन बजे निकाले गये। हम लोगों ने फोटोग्राफी

की। आज इस काफिले में मात्र तीस वाहन करीब ही थे। एक सुरक्षाकर्मी के अनुसार सात दिन पहले तीन सौ वाहन तक प्रतिदिन अमरनाथ यात्रा हेतु निकल रहे थे। संख्या घटने के दो कारण लगे। एक तो देश में आ रहे आम चुनाव, दूसरा अमरनाथ की पवित्र गुफा में शिवलिंग पिघलना। सात दिन पूर्व भीड़ के कारण आई तकलीफें भी यात्रियों की संख्या में कमी का कारण हो सकती है।

हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही। पूरी कश्मीर घाटी में 'हर हर, बम बम,' 'जय भोले,' 'भारत माता की जय,' 'वन्देमातरम्,' 'जयहिन्द' जैसे नारे गुन्जायमान हुये। पूरे रास्ते सुरक्षाकर्मीयों तथा कश्मीरी लोगों ने हाथ उठा–उठाकर यात्रियों का अभिवादन किया। पहलगांव बस स्टेण्ड पर सामान उतारने के बाद गर्ग एवं तनेजा होटल तलाशने गये जो पूरे एक घंटे में ताज होटल के दो कमरे तय करके आये। हाथ मुंह धो हम खाना खाने हेतु निकले। छः लोगों ने एक सरदार के होटल पर तन्दूरी रोटी व सब्जी खाई। तनेजा व ठेनुंआजी ने लंगर में भोजन किया। हम सड़क पर आपस में मिल गये तथा वापस लंगरों की व्यवस्था देखने हेतु निकल गये। कुछ इन्सानों द्वारा सेवा भाव से ऐसी सुन्दर व्यवस्था करना आश्चर्यजनक ही है। हमने यहां दूध ग्रहण किया। कल हम यहां अपने सूटकेस जमा करवायेंगे। पारीक सा. को कुछ एलर्जी जैसा हो गया। लंगर पर ही दवा दिलवाई। दस बजे करीब सब ताज होटल पहुंच गये। अब हमें नींद निकालनी है ताकि सुबह से प्रारम्भ होने वाली थकाऊ यात्रा में परेशानी न हो।

19–8–99 गुरूवार को हम प्रातः जल्दी उठ गये। हमने अपने छोटे कपड़े धोऐ व स्नान से निपटे। हमारे दो साथी गर्ग व तनेजा लिद्दर नदी में नहाने गये। हमने साढ़े सात बजे होटल खाली कर दिया। इस बीच अशोक द्वय ने कश्मीरी औरतों से कुछ खरीददारी की। रविन्द्र ठेनुंआ से एक जवान अंग्रेजी बोलने वाले साधु ने प्रभावित कर उनकी जेब में रखे एक सौ दस रुपये झटक लिये। इसी बीच हमने कुली कर लिया तथा सारा सामान लंगर पर ले गये। छः सूटकेस लंगर में जमा करवाकर रसीद ली तथा टैक्सी स्टेण्ड की ओर बढ़े। यहां रास्ते में बहुत आग्रह कर करके नाश्ता करवाया जा रहा था। आज हमने होटल में ही नाश्ता कर लिया था। अतः अधिकतर लंगर वालों से सविनय मना किया। पूछते हुये टैक्सी की तलाश करते, आखिर हम चन्दनबाड़ी जाने वाली मिनी बस के अड्डे पर पहुंचे। मिनी बसों तक पहुंचने से पूर्व हमें बहुत घूमकर मेटल डिक्टेटर में से गुजारा गया। शरीर पर हाथ लगा–लगा कर जामा तलाशी भी ली गई। लंगर वालों का यहां भी नाश्ता करने का प्रबल आग्रह रहा।

इस वर्ष राखी से पूर्व एकाएक अमरनाथ यात्रियों की संख्या में भारी कमी आ गई। वर्ष 1994 में हमें भीड़ के कारण जगह–जगह असुविधायें झेलनी पड़ी थी। आज यहां कोई समस्या नहीं है। काफी सारी मिनीबसें खड़ी है। हम तीन–चार बसें छोड़, पीछे खड़ी बिल्कुल खाली बस में आगे की सीटों पर बैठ गये। कोई आध घंटे बाद बस रवाना हो पाई। आखिर भरेंगी तभी तो बसें जायेंगी। बस में सीटों के बराबर ही सवारियां थी। चन्दनबाड़ी के मार्ग में सीधा चढ़ाव आता है। पूरा मार्ग खूबसूरत हरे–भरे पहाड़ी ढलानों वाला है। कितना ही देखो आंखें तृप्त नहीं होती। रास्ते भर हम मनमोहक दृश्यों का आनन्द लेते तथा बम भोले के नारे लगाते गये। दो एक जगह साइड देने के लिये बस को आगे–पीछे होना पड़ा। वैसे अभी चन्दनबाड़ी से पहलगांव यातायात बहुत कम है। हम सारे साथी खिड़कियों के पास ही बैठे थे। अशोक तनेजा ने मजाकपट्टी कर कंडेक्टर से अच्छी दौस्ती गांठ ली। पूरे रास्ते हँसीमजाक का दौर चला। रास्ते में एक गांव आया जहां बहुतेरे चरवाहों के परिवार रहते हैं। वहां बस रुकते ही लड़कियों ने हाथ फैलाकर पैसे मांगना शुरू कर दिया। ये लडकियां, जिनमें बड़ी जवान लड़कियां भी थी, पैसे के लिये बस पर लटक गई। ऐसे में हमने नाश्ते के लिये लाई हुई थैलियों में से भूमड़े (भुने चने) की थैली निकाल कर बांटना शुरू कर दिया। कुछ बिखरा कुछ बंटा। बाकी थैली एक लडकी प्रेम जी राठौर के हाथ से छीन कर ले गई जो बिखर गई। दो लड़कियां हमारी बस के साथ कोई आध किलोमीटर तक दौड़ी। सारे यात्री चिन्तित उन्हें लताड़ते रहे। कहीं कोई बस के पहिये में आकर या पहाड़ी रास्ते में गिरकर दुर्घटनाग्रस्त न हो जाये। हम साथियों के बीच बहस छिडी–यह गरीबी है या आदत या और कुछ।

रास्ते में हमने बस यात्रियों को हाजमोला की गोलियां बांटी। लौंग, इलाईची, सुपारी का सेवन भी हुआ। इस रास्ते की एक घटना और याद है। एक मिलेट्री जवान ने ऊंची पहाड़ी से भागकर आ, आवाजें दे, हमारी मिनी बस रुकवाई। बस कंडेक्टर ने उसे बताया कि दुकान बंद थी, दवाईयां नहीं मिली। करीब पांच मिनट वार्ता हेतु बस रुकी रही। पता लगा मिलेट्री वाले जवान अपनी जरूरत की चीजें पहलगांव से इन मिनी बस के ड्राईवर, कंडेक्टर के हाथ मंगवा लेते हैं। जवान का एक साथी बीमार है। इनकी ड्यूटी ऊंची पहाड़ी पर है। हमने लक्षणों के आधार पर हमारी दवा की थैली में से दवाईयां निकाल कर उस जवान को दी।

पद्यात्रा प्रारम्भ

साढे दस बजे चंदनबाड़ी नामक खूबसूरत घाटी में बस से उतरे। हम सभी अत्यन्त उत्साह से चहक रहे थे। फिर यहां का वातावारण देख हमारा उत्साह और बढ़ गया। मेले में लगी दुकानों की तरह यहां लंगरों का बाजार लगा था। कुछ दुकानें भी लगी हैं। हमने पहले आये लंगर पर ही पेट पूजा कर ली। किसी भी चीज की कमी नहीं है यहां। खीर, चावल, पुड़ी, सादा रोटी, दाल, मिठाई, पकौड़ी तो सामान्य रूप से सभी जगह मिल रही है। यहां काजू किशमिश भी यात्रियों को बांटे जा रहे हैं। लौंग, इलाइची, सुपारी तथा हाजमोला कैण्डी की मीठी गोलीयां भी खाने को मिली। सब बिल्कुल मुफ्त। चन्दनबाड़ी में खाने–पीने के चक्कर में हम साथी आपस में बिछुड गये। आगे के एक अन्य लंगर में –जहां होकर सब यात्रियों को गुजरना ही था, हमें आधा घंटा बैठना पड़ा। यहां लंगर वालों ने बहुत आग्रह से हमें रोककर नाश्ता कराया। हाथ रखने के लिये मैने भी कुछ खाया। मैं एक कुर्सी पर लंगर के बाहर निगाहें रखे बैठा रहा। जब सब साथी आ गये तो हम आगे बढ़े। हमने पुनः साथ–साथ चलने का संकल्प दोहराया। हम साथियों के कंधों पर एक बैग टंगा था तथा हाथ में छड़ी थी। लंगरों एवं दुकानों के पूरे बाजार को पार करते हमें दसों जगह लंगर वालों के आग्रह को हाथ जोड़ सविनय अस्वीकार करना पड़ा। कहां तक खायें? अभी रास्ता लम्बा हैं।

कोई आध कि.मी. चलते ही हम सब साथी फिर बिछुड गये। लिद्दर नदी की पवित्र जल धारा के पास पिस्सूटॉप की जड़ में एक खूबसूरत सी जगह पर रुककर हमने साथियों का इंतजार किया। यहां सबने अपनी–अपनी बोतलों में पानी भरा तथा फोटोग्राफी भी की। संयोग से यहां एक छोटा बच्चा बीस रुपये में मेरा बैग पिस्सूटॉप तक ले जाने को तैयार हो गया। हमारे दल के तय नियमों के अनुसार हमें बैग साथ रखने थे पर लड़के के ज्यादा अनुनय विनय करने पर मैने उसे बैग थमा दिया। इसके साथ ही मैने अपने सभी साथियों से भी कह दिया कि यहां पिठ्ठू बहुत सस्ते हैं, अपने बैग उन्हें पैसे तय करके दे दो। धीरे–धीरे सभी साथियों ने अपने कंधो का बोझ हल्का कर लिया। पिस्सूटॉप चढते हुये हम सारे साथी पुनः अलग हो गये। चतरसिंह जी का कहीं पता नहीं लगा। उन्हें हमने कई जगह आवाजें भी दी। प्रेमजी व पारीक सा. ने पिस्सूटॉप हेतु रास्ते में घोड़ा कर लिया। आगे प्रेमजी के बैग को उठाये हुये पिठ्ठू गायब हो गया। उससे हम बहुत बैचेन रहे। लोगों ने हमें मूर्ख भी कहा क्योंकि हमने बिना टोकन (पहचान पत्र) लिये पिठ्ठू को अपना सामान दे दिया था। दरअसल अमरनाथ यात्रा में सरकार की ओर से जगह–जगह हिदायतें लिखी गई है कि अपना सामान उठाने हेतु पिठ्ठू करने या यात्रा हेतु घोड़ा करने से पूर्व पिठ्ठू या घोड़े वालों का टोकन अपने पास रख लें तथा कोई शक होने पर सुरक्षाबलों की मदद लें। ऐसी हालत में यात्री को पिठ्ठू की निर्धारित दरें देनी होती है। फिर यात्री शुरू में उत्साहित रहता है। रास्ते में थकान आने पर ही उसे घोड़े या पिठ्ठू की याद आती है। ऐसी दशा में बिना टोकन वाले पिठ्ठू ही मिलते है। खोया हुआ पिठ्ठू काफी देर बाद ऊपर लंगर में इंतजार करता हुआ मिला। पिस्सूटॉप अमरनाथ यात्रा की सर्वाधिक कठिन चढ़ाई मानी जाती है। यहां मुख्यमार्ग के अतिरिक्त शार्टकट का भी यात्री प्रयोग करते हैं। हमने भी छोटे मार्ग अपनाये। हमारे ठेनुंआजी तो अत्यन्त खतरनाक शार्टकट से ऊपर चढ़े। एक दो जगह तो मैने उन्हें टोका भी। लगभग पौन चढ़ाई चढ़ने

के बाद एक दुर्घटना होते–होते बची। हंसराज गेरा के एक घोड़ा टक्कर मार गया। वह तो गेरा संभल गया, अन्यथा दो तीन सौ फुट नीचे टपकता। हम देखने वालों के रोंगटे खड़े हो गये। पर शुक्र खुदा का कुछ नहीं हुआ। पूरे पिस्सूटॉप पर पानी, कोल्ड ड्रिंक्स, बीडी, सिगरेट तथा फल बेचने वाले बैठे हैं। एक से मैने पूछा,

''ऐसे यात्री गिर भी जाते होंगे।''

''हां, आठ दस गिर ही गये। हाथ पांव तो टूटे हैं, पर मरा कोई नहीं।''

पिस्सूटॉप पर हमने तीन जगह फोटोग्राफी की। पहले पिस्सूटॉप की जड़ में, झरने के पास। फिर बीच में और अंत में ऊपर पहुंच कर। हम सब साथी आपस में बिछुड गये तो ऊपर लंगर में जाकर ही मिले। वहां से पुनः सभी साथी अलग–अलग समय पर आगे के लिये रवाना होते गये। पिठ्ठूओं को शेषनाग तक के लिये कर लिया गया। लंगर से खाना खाकर सबसे अंत में अशोक करोल्या के साथ मैं निकला। पिस्सूटॉप के ऊपर लंगर भी यादगार रहा। शादी के बफर डिनर की पार्टी हो जैसे। तीन मिठाईयां, दो मुरब्बे, तीन तरह के अचार, दहीबड़ा, पकौड़ी, चिलडे, पुरी, सब्जियां और न जाने क्या क्या? मैंने खूब चख–चख कर खाया व हमारे मजदूर बच्चों पिठ्ठूओं को भी खिलाया। इस पर मुझे लंगर वालों से झिड़की सुननी पड़ी क्योंकि यहां पर पिठ्ठूओं को लंगर में खाने की अनुमति नहीं है।

पिस्सूटॉप की आगे की यात्रा में करोल्या व मैं पूर्णतया मौजमस्ती से आगे बढ़े। हमारे सारे साथी हमारे से काफी आगे चल रहे थे। हम दोनों के सामान उठाये एक लड़का चल रहा था। हमने उसे अपने साथ ही रखा था। तीन किलोमीटर की यात्रा के बाद पुनः एक खुली जगह जोजबल आई। यहां भी बहुत लंगर लगते हैं। लंगर वाले यात्रियों के मार्ग में खड़े हो जबर्दस्त आग्रह के साथ खाना खिला रहे हैं। यहां पुनः हम आठों साथी मिल गये। थोड़ा आगे–पीछे सभी साथी यात्रा पर आगे बढ़ गये। बहुत ही सुहाने दृश्य, पर्वतारोहण का रोमांच इस यात्रा में महसूस होता है। फोटो भी लिये। चढ़ाई विकट है। रास्ता भी अपेक्षाकृत संकरा व खतरनाक है। जल धारा काफी नीचे बह रही है। दो किलोमीटर चलने के बाद एक चौड़ी घाटी आई। यहां कच्ची टापरियां बनी है। इस स्थान का नाम नागाकोठी है। यहां सुरक्षाबलों का विशेष पहरा है। हम सभी साथी पुनः यहां इकठ्ठे मिले। फौजियों के साथ फोटोग्राफी हुई। हमारे साथी चतरसिंह जी को कमर दर्द के कारण चलना दुश्वार हो रहा है। उन्हें पचास रूपये में एक घोड़ा करवा दिया। उम्मीद से काफी दूर शेषनाग नामक स्थान निकला। फोटो हमने बहुत खींचे पर मुझे शीघ्र ही पता चल गया कि कैमरा काम नहीं कर रहा। साढ़े चार बजे शेषनाग नामक मनोरम झील में हम शेषनाग की आकृति तलाशने लगे। चारों ओर पहाड़ों से घिरी झील। इसमें पचासों जलधारायें अलग–अलग पहाड़ी से आकर गिर रही हैं। पहाड़ों की छाया झील में विभिन्न आकृतियां बना रही है। सर्दी का अहसास काफी बढ़ गया है। ऐसे में भी दस पांच वीर यात्री झील में स्नान करते दिखाई दिये। हमारे साथियों ने भी बात तो की पर सैकड़ों फुट नीचे उतर, करीब एक किलोमीटर चल झील तक पहुंचने का साहस कोई नहीं जुटा पाया। चार पांच कि.मी. परिधि वाली झील में पानी निकलने का एक संकरा रास्ता है। बांध बनाने के लिये अत्यन्त उपयुक्त स्थान। विशाल जलाशय व बिजली उत्पादन की भरपूर संभावनायें। पर इस जंगल में कौन निर्माण कराने की सोचे? यहां आठ माह तो शायद बर्फ ही जमी रहती होगी। यात्रा के डेढ़ मास के अलावा तो यहां कीट पतंगे और पक्षी भी नहीं रहते।

शेषनाग

शेषनाग में जड़ेजा जी हमें इंतजार करते मिल गये। घोड़े वाले ने अपने तम्बू में उन्हें ठहरा लिया तथा हम आठों के लिये भी स्थान सुरक्षित कर लिया। मात्र पंद्रह रूपये प्रति व्यक्ति में। बारह बरस पहले भी यहां एक रात तम्बू में सोने के पचास रुपये लगते थे। हमें अत्यन्त सस्ता लगा। हालांकि थोड़ी असुविधा व गंदगी थी पर थकान के कारण आगे तंबू ढूंढने जाने की श्रद्धा भी नहीं

थी। ठीक है पंद्रह रूपये में और क्या आयेगा? हमने अपने सामान फैलाये और पसर गये। आवश्यकतानुसार हमारे साथियों ने चाय पी। घोड़े वाले तथा पिठ्ठू ने भी हमारे खाते से एक–एक चाय (प्रति चाय पांच रू.) पी। चाय बनाने हेतु कैरोसीन के स्टोव का प्रयोग किया जा रहा है। जो इसी तम्बू के एक कोने में चल रहा है। अभी तम्बू के आगे के परदे खोल रखे हैं, जिससे तम्बू एक खुली दुकान की तरह लग रहा है। तम्बू में नीचे तिरपाल बिछा है। तिरपाल पर हमने अपने सामान, लाठियां, जूते रखे। हर व्यक्ति को एक रजाई दी गई है। यहां कपड़े पहन कर ही सोने का रिवाज है। मैंने लुंगी तिरपाल पर बिछाई। अपना शॉल, रजाई व मेरे शरीर के बीच में ओढ़ा। इस तरह ऊपर–नीचें दोनों तरफ की बदबू से बचने का इंतजाम किया। जमीन की सतह ऊबड़–खाबड़ है। मैं तय नहीं कर पाया सिर किधर रखूं, व पैर किधर। पूरा शरीर एक और को लुढ़क रहा है। आखिर में मैं थोड़ा तिरछा होकर सोया। कुछ राहत मिली और झपकी लगी।

पेशाब करने की तीव्र इच्छा से मैं उठा। रवेन्द्रजी ठेनुआं भी जग रहे थे। दोनों का मकसद एक था। मैंने सर्दी के कपड़े पहन लिये, ठेनुआं जी पैंट–शर्ट में ही चल दिये। साढ़े छः बजे करीब अच्छा उजाला था। यहां कहीं आड़ ही नहीं है और गंदगी भयंकर है। हाथ धोने का पानी मिलना ही मुश्किल लग रहा है। लंगर वालों ने न जाने कैसे पाइप फोड़ कर पानी की व्यवस्था बना रखी है। बूंद–बूंद टपकते पानी से हाथ धोये। शीतल बर्फीली हवाओं ने ठैनुंआजी की हड्डियों को कंपा दिया। उन्हें सिरदर्द जुकाम जैसी तकलीफ हुई। हम वापस तम्बू में आये। रास्ते में बहुत खूबसूरत साफ सुथरे पलंगों वाले तम्बू देखे। किराया भी बहुत कम। हमें हमारे आज के बसेरे पर अफसोस हुआ। दो तीन घंटे आराम करने के बाद तथा सारा सामान फैला लेने के बाद, हम हमारे गंदे आशियाने को छोड़ने पर सहमत न हो सके।

तम्बू में आकर मैंने साथियों को खाना खाने हेतु थोड़ा आगे ही लगे लंगर में जाने को उत्प्रेरित किया। अशोक करोल्या व मैने साथ जाकर खाना खाया। मैं तो दस पांच कौर ही खा सका। पेट का भारीपन, मुंह का बदलता स्वाद और सब से बढ़कर डर, कहीं रात में तकलीफ न हो जाये। लंगर वालों के मुंह से ही सुना। आज बारह पन्द्रह सौ में ज्यादा यात्री नहीं है। यहां एकदम उतार आ गया है। न जाने क्या हुआ? पहले यात्रा सिर्फ रक्षाबन्धन के दिन ही होती थी। धीरे–धीरे रक्षाबंधन से पूर्व यात्रा होने लगी। अब तो सरकार ने ही रक्षाबंधन से एक माह पूर्व यात्रा की घोषणा कर दी। यात्री तो इससे भी पहले आ जाते हैं। परम्परागतरूप से तो यह कहा जाता था कि यहां रक्षाबंधन के दिन ही सबसे बड़ा शिवलिंग बनता है पर अब यह धारणा झूठी पड़ गई है। सबसे पहले आनेवाले यात्रियों को ही यहां सब से बड़ा शिवलिंग मिलता है। इसके बाद संभवतः इन्सानी गर्मी से शिवलिंग क्रमशः पिघलने लगता है और रक्षाबंधन आते–आते तो नामो निशान ही मिट जाता है। यात्रियों की संख्या में कमी आने का सबसे बड़ा कारण मैं इसी को मानता हूं।

वर्ष 1987 या 1988 से आतंकवाद के चलते छड़ी मुबारक जम्मू से वाहनों द्वारा सीधी पहलगांव आने लगी। आतंकवाद कम होने पर छड़ी मुबारक श्रीनगर से निकाले जाने की परंपरा तो बनी हुई है परन्तु घाटी में पैदल यात्रा की परम्परा समाप्त हो गई। अब छड़ी मुबारक भारी सुरक्षा के बीच श्रीनगर से वाहनों द्वारा पहलगांव पहुंचाई जाती है। वहां से पद्यात्रा शुरू होती है। संभवतः बुजुर्ग महंत घोड़ों पर जाते हैं। रक्षाबंधन के दिन पूजन कर गुफा से घोड़ों के द्वारा शायद उसी दिन छड़ी मुबारक एवं साधु संत वापस पहलगांव पहुंच जाते हैं। छड़ी मुबारक के हमने 1994 की यात्रा में पहलगांव, चंदनबाड़ी व पंचतरणी में दर्शन किये थे। उस वक्त हम रक्षाबंधन पर ही गुफा पहुंचे थे। चंदनबाड़ी, शेषनाग, पंचतरणी व वापस पंचतरणी हम छड़ी मुबारक के साथ–साथ ही विश्राम कर रहे थे। छड़ी मुबारक की प्रातः सायं भव्य आरती होती है। आरती के बाद भजन कीर्तन होता है। नागा साधु घेरा बनाकर घंटो कीर्तन करते रहते है। जिन पर यात्री नकद भेंट चढ़ाते हैं। इस बार हम यात्रा पर जल्दी आये हैं। अतः अभी हमें छड़ी मुबारक के दर्शन नहीं हो सके। उम्मीद है वापस आते समय हम छड़ी मुबारक के दर्शन कर सकेंगे।

पंचतरणी

20–8–99 शुक्रवार रात थके हारे सभी साथी शेषनाग में आठ से साढ़े आठ बजे के बीच गहरी निंद्रा में पक्के फर्श पर सो गये। 21–अगस्त 1999 शनिवार प्रातः जल्दी उठना ही था। पहाड़ों का प्रातः का सौन्दर्य अलग आभा बिखेर रहा है। लंगर के पास लगे नल पर बर्फ के से ठण्डे पानी से हाथ मुंह धो, कुल्ले दातुन किये। रात ही तीनों वृद्धों के लिये घोड़ा कर लिया था। उन्हें घोड़ो पर बिठा विदा किया और हम पांच साथी साथ–साथ पैदल निकले। शेषनाग में हम पहली पहाड़ी पर ही रुक गये थे। एक गहरी घाटी का झरना पारकर दूसरी पहाड़ी पर भी काफी तम्बू लगे हैं। हमने दूसरी पहाड़ी पर आखरी में लगे लंगर में नाश्ता किया। अब चढ़ाई वाला व कठिन मार्ग शुरू होता है। गणेशटॉप तक काफी चढ़ाई है रास्ते में पानी की भी बहुत कमी रहती है। पुराने अनुभवों का लाभ लेने से हमें कोई दिक्कत महसूस नहीं हुई। हमारे पास हाजमोला, आई सी की मीठी गोलियां तथा बैग में रखी बोतलों में पानी था। आज हमने पिठ्ठू नहीं किये। कल तो बच्चे बहुत सस्ते में सामान उठा लाये थे पर आज भारी मजदूरी मांगी गई थी। मैं गणेशटॉप पौषपथरी हर जगह रुकता शाम 5 बजे पंचतरणी पहुंचा। मेरे साथी पूर्व में ही यहां पहुंच चुके थे। मुझे बहुत भारी थकान व बुखार महसूस हो रहा है। हमारे साथियों ने आठ पलंगों वाला पूरा तम्बू किराये से तय कर रखा है। मैंने अपने सामान जूते, कपड़े उतारे तथा रजाई ओढ़ कर सो गया। मेरे साथी भी कमोबेश कुछ खा पी और साथ ही बुखार की गोली खाकर सो गये। देर से ही सही, मुझे भी काम्बीफ्लेम खानी पड़ी।

ठैनुआं जी को नहाने का बहुत शौक है। पंचतरणी में सायं छः बजे ठैनुआं जी तौलिया ले नदी में नहाने चले गये। धुंधलका होने लगा था तथा शीतल हवायें शरीर को तीर की तरह बेध रही थी। ठण्ड इतनी थी कि स्वयं ठैनुआं जी को भी किसी अनहोनी की आशंका थी। वे पहले ही मिलेट्री अस्पताल में इलाज की व्यवस्था देख आये थे। नदी के किनारे टेन्टों में बैठे सैंकडों लोग उनका यह दुस्साहस देखने लगे। नदी में बहते बर्फ के टुकड़ों को देखकर एक बार तो ठैनुआं जी स्वयं घबरा गये पर अपनी नाक बचाने के लिए पहले लौटे से फिर नदी में लेटकर नहाये। कपड़े बदल वे कांपते हुये अपने टेन्ट में आये। साथियों ने उन्हें सरसों के तेल की मालिश करवाई तथा दो रजाई उढ़ा कर सुलाया।

मैं डेढ़–दो घंटे बाद जागा, तब तक मेरी थकान व बुखार रफूचक्कर हो चुका था। हम कुछ खाने के लिये एक लंगर में गये। यात्रियों की भीड़ नहीं थी। लंगर लगाने वाले भी फालतू बैठे हुये थे। इस लंगर में रात को सोने की भी व्यवस्था है। बातों ही बातों पता चला कि इस लंगर का प्रधान आयोजक वर्ष 1996 का अमरनाथ यात्री है। उस वर्ष शेषनाग से गुफा तक एक ही रात में बारह इंच बर्फ गिरी थी। अपुष्ट खबरों के अनुसार तीन से पांच हजार आदमी, जिनमें अधिकांश तीर्थयात्री थे, काल कलवित हुये। सरकार ने आठ सौ आदमी मरने की ही खबर जारी की थी। लंगर व्यवस्थापक के अनुसार इन कश्मीरियों ने यात्रियों को उस वर्ष मनमाने तरीके से लूटा था तथा एक तरह से नंगा करके ही भगाया था। कश्मीरी घोड़े वालों ने मुसीबत के समय जलाऊ लकड़ी में तापने के पांच सौ रूपये तक, तथा घोड़ों के पांच हजार रूपये तक यात्रियों से वसूल किये थे। मेरे लिये यह एक सर्वथा नई जानकारी है। हमारा मन सन् 1996 की त्रासदी की दास्तान सुनने में लग गया। वे लोग छः साथी थे, जो किसी तरह जान बचाकर अपने घर पहुंच सके। इन्हें भारी तकलीफें झेलनी पड़ी थी। आगे अमरनाथ यात्रियों को तकलीफ न हो, इसलिये इन सभी साथियों ने यहां पंचतरणी में लंगर लगाने का निश्चय किया और इस योजना का तीन वर्ष से क्रियान्वयन कर यात्रियों की सब प्रकार से सेवा कर रहे हैं।

वर्ष 1994 में मैंने अमरनाथ यात्रा की थी। उस वक्त मेरे साथ मेरे छोटे भाई अशोक का साला संजयगर्ग भी था। संजय को यात्रा में इतना आनन्द आया कि वह वर्ष 1996 में अपने झालावाड़ के पांच मित्रों के साथ मारूति वेन लेकर अमरनाथ यात्रा पर आ गया। वे पहलगांव पहुंचे। उसके बाद बारिश व बर्फबारी शुरू हो गयी। सारे रास्ते बंद हो गये। यात्री जहां के तहां

थम गये। अस्थाई तम्बूओं एवं लंगर वालों की व्यवस्था अस्तव्यस्त हो गयी। उन्हें कोई होटल भी नहीं मिली। वे रात भर मारूति वेन में सोये। रात भर बर्फ गिरती रही। प्रातः जब वे उठे तो मारूति वेन पूरे पहियों तक बर्फ में गढ़ चुकी थी। मौसम खुलने पर वे बाहर निकल सके थे। प्रशासन ने यात्रा बंद कर दी। ऊपर फंसे यात्रियों को बचा कर नीचे लाने की चिंता में ही पूरा प्रशासन जुट गया। दो दिन बाद मौसम खुल गया पर प्रशासन ने पहलगांव में टिके यात्रियों को ऊपर जाने की अनुमति नहीं दी। ऐसे में अमरनाथ यात्रा के इंतजार में रुके यात्रियों का गुस्सा फूट पड़ा। नारेबाजी हुई और हजारों यात्रियों का हुजूम प्रशासन द्वारा लगाये अवरोध तोड़कर पहलगांव से चन्दनबाड़ी की ओर बढ़ चला। संजय ने बताया था कि वे भी छहों साथी आगे बढ़ गये थे पर बर्फ व टूटे रास्तों के कारण उन्हें एक दो कि.मी. घूम–फिरकर निराश वापस आना पड़ा। उस वर्ष फिर कोई यात्री दर्शन नहीं कर सका। प्रशासन ने श्रीनगर से छड़ी मुबारक व संतो को हेलीकॉप्टर से रक्षाबंधन के दिन सीधा गुफा के पास पहुंचाया और छड़ी मुबारक यात्रा की रस्म पूरी की।

श्रीअमरनाथजी दर्शन

21–8–99 शनिवार–रात लंगर से आने के बाद सब सो गये। प्रातः चार बजे नींद खुल गई। यात्रा पर निकलने में छः बज गये। चतरसिंह जी को रास्ते में घोड़ा करना पड़ा। संगम घाटी से आगे अमरगंगा से पूर्व बर्फ के पुलनुमा ग्लेशियर को पार करते समय अशोक तनेजा के साथ एक दुर्घटना हुई। वह बर्फ पर फिसल कर ढ़लानपर नदी की ओर गिर गया। यह घातक दुर्घटना ठैनुआं जी के सामने हुई। उन्होंने बर्फ में अपने पैर व छड़ी जमाकर तनेजा की बांह पकड़ ली। उसी समय वहां तैनात सुरक्षा बल का जवान भी दौड़ पड़ा। दोनों ने बांहे पकड़ तनेजा को खड़ा किया। तनेजा की उंगली में चोट लगी तथा वह दर्द से कराहने लगा। भय के मारे उसकी आँखो में आँसू तक उतर आये। फिर दोनों जवान उसे तसल्ली देते बांहों से पकड़ मिलेट्री के चिकित्सालय पर ले गये। वहां डाक्टर ने उसकी बायें हाथ की चोटग्रस्त अनामिका पर स्प्रे किया तथा खाने को गोलियां दी। तनेजा की उस अंगुली में अंगुठी थी जो सूजन के कारण फंस गई तथा बहुत प्रयासों के बाद भी नहीं निकल पाई। यात्रा के बाद अंगुठी कटवाकर निकलवानी पड़ी तथा अंगुली तो टेढ़ी ही रह गई जो उसे ताउम्र इस हृदयविदारक घटना की याद दिलाती रहेगी।

सभी साथी साढ़े नौ बजे तक अमरनाथ गुफा के ठीक सामने स्थित अमरगंगा के किनारे पहुंच गये। यहां सभी यात्री स्नान करते हैं। हमने भी दो–तीन लोटे पानी शरीर पर डालकर स्नान की रस्म पूरी की। स्नान करने की सबसे ज्यादा हिम्मत ठेनुंआजी में ही थी। उन्होंने कल पंचतरणी में भी स्नान किया था। बाकी हम में से अधिकांश तो पहलगांव के बाद नहीं नहाये थे। अमरनाथ गुफा पर भीड़ नहीं थी। अतः आराम से जाकर खूब देर तक गुफा में घूमफिरकर दर्शन किये। इस वर्ष भी मुझे शिवलिंग नहीं मिला। न जाने क्यों अंतर्यामी मुझे देख अन्तर्ध्यान हो जाते हैं? कोई एक फुट व्यास की बर्फ की सिल्ली, कोई छः इंच मोटी शिवलिंग के नाम पर दिखाई जा रही है। यहां पार्वती के स्वरूप में तीन चार फुट व्यास की, दो तीन इंच जमी मोटी बर्फ बताई जा रही है। हमने यहां पूजन अर्चन किया एवं भेंट पात्र में मामूली राशि चढ़ाई। यहां से हमारे कई साथियों ने अमरनाथजी का जल अपनी केटलियों में भरा। नीचे उतरते वक्त एक जगह दस पन्द्रह लोगों की भीड़ लगी थी। पता लगा यहां मिलेट्री वाले फोन से सस्ते में बात करवा रहे हैं। हम भी लाइन में लग गये। बारां बात हुई। हरिमोहन बंसल (छोटे भाई) ने खुश खबरी दी,

''भाई साहब अपने को कप्तान साबुन की एजेन्सी मिल गई है। रुपयों का इंतजाम करना है। आप जल्दी से जल्दी आ जाओ।''

मुझे यह भोलेनाथ की बहुत बड़ी कृपा लगी और मेरा मन प्रसन्न हो गया। मैंने साथियों को यह बात बताई। सबने मुझे बधाई दी। हमने आगे लंगर पर खाना खाया। हम सब साथियों ने भूखे पेट ही भोलेनाथ के दर्शन किये थे। भूखे तो हम सब थे पर ठंड व थकान से मुंह कड़वा हो रहा था। बहुत कम ही खा पाये। दर्शन पूजन व भोजन कर हम वापसी यात्रा हेतु रवाना हुये।

संगम घाटी

गुफा की ओर अमरगंगा पर बना बर्फ का पुल पार करते ही कुछ मैदान सा आता हैं। यहां तक यात्री घोड़े से आते है तथा जाते समय भी घोड़े यहीं मिलते हैं। यहीं पर हमने आते समय स्नान किया था। इस स्थान से गुफा करीब 1 किलोमीटर तथा करीब 1000 फीट ऊंचाई पर है। यह स्थान स्नान घाट के रूप में ज्यादा प्रयोग होता है। हम आठों साथी साढ़े बारह बजे इस स्थान पर पहुंच गये। यहां से हमें चतरसिंह जी जाडेजा के लिये घोड़ा करना है। घोड़े वाले पंचतरणी के 100 रूपये करीब मांग रहे है। यहां से बालटाल के लिये घोड़े तीन सौ रूपये में जा रहे हैं। हमारे साथियों के मन में विचार आया कि क्यों न बालटाल से ही उतर जावें? कोई पंद्रह बीस मिनट तर्क वितर्क के बाद आठ घोड़े कर बालटाल पहुंचने का निर्णय हुआ। बादल गहरा गये है तथा छींटे आने लगे है। तीन–तीन सौ रुपये में घोड़े मिल भी गये। हम सब घोड़ों पर बैठ संगम घाटी पहुंच गये। वहां ऊंची पहाड़ी से नीचे गहराई का दृश्य देख हंसराज गेरा के हाथ पांव फूल गये। वह चिल्लाकर घोड़े से उतर गया।

''मुझे तो डर लग रहा है। मैं तो पैदल ही जाऊंगा।''

उसके साथ ठेनुआं जी चल रहे थे। वे भी घोड़े से उतर पड़े।

''चल मैं भी तेरे साथ चल रहा हूं।''

दोनों घोड़े वालों को पचास–पचास रूपये अब तक की यात्रा का देकर विदा किया।

संगम घाटी से नीचे बहुत गहराई तक कोई 1000–800 फीट उतार है। यहां से उतार एकदम सीधा है। नीचे झांकते ही कंपकंपी सी छूटने लगती है। घोड़े वालों ने यहां हम को उतार दिया। इस उतार में खतरा है। सभी घोड़े वाले यहां यात्रीयों को पैदल ही चलाते हैं। मुझे यहां पैदल चलने में रिपट कर गिरने का डर लग रहा है। दो फुट की टेढीमेढी पगडंडी। वह भी स्पष्ट नजर नहीं आती है। भोले का नाम लेकर उतरे ही। यहां नीचे भी एक लंगर लगा हुआ है। यहां हम रुके नहीं, घोड़े वालों ने घाटी के ऊपर तक भी हमें पैदल चलवाया। मार्ग वास्तव में मार्ग जैसा है ही नहीं। ऊपर जाते–जाते भयंकर थकान आ गई व सांस फूलने लगी। फिर घोड़े से सफर शुरू हुआ। इस मार्ग से यात्री आ–जा रहे हैं। बालटाल का रास्ता छोटा रास्ता है, चौदह किमी का। यहां जवान यात्री एक दिन में अमरनाथ दर्शन कर वापस पहुंच जाते हैं पर यह भाग–दौड़ वाली यात्रा होती है। यात्री प्रकृति का आनन्द नहीं ले पाता। यह मार्ग छोटी पगडंडी वाला व खतरनाक है। जरा सी बरसात होते ही यह मार्ग यात्रा हेतु बंद कर दिया जाता है।

बालटॉल

घोड़े वालों ने हमें सीधे ढलान पर आगे भी दो बार कोई दो किलोमीटर पैदल चलवाया। तब जाकर हम बालटाल सायं चार बजे पहुंचे। रास्ते में हल्के छींटे आये और हमारे बालटाल लंगर पर उतरने के बाद थोड़ा तेज पानी आया। ऐसे में हमें हमारे दो पैदल आने वाले साथियों, हंसराज गेरा एवं रविन्द्र जी ठेनुंआ की विशेष चिंता रही पर उन्होंने उम्मीद जितना इंतजार नहीं करवाया। कोई पांच बजे वे दोनों सकुशल पहुंच गये। हमारी भी जान में जान आई। ठेनुआं जी ने बताया कि पानी व अंधेरे के डर के मारे वे भागे–भागे आ रहे हैं। रुकने का काम ही नहीं है। खैर हमने यहां लगे लंगरों पर बढ़िया भोजन ग्रहण किया। बहुत विनम्रता पूर्वक यात्रियों को रोक–रोक कर दूध, भोजन, नाश्ता दिया जा रहा है। यहां लंगर में सोने की भी व्यवस्था है पर हम कुछ बेहतर जगह सोना चाहते थे। तीनों वृद्ध (पारीक सा., प्रेमजी, जड़ेजा जी) पूर्व में ही ऊपर पहाड़ी के तम्बूओं में बेस कैम्प पर चले गये थे। हम पांच साथी बाद में गये। तम्बू नगरी में पहुंचने से पूर्व रास्ते में हमें बारिश मिली और हमें एक मिलेट्री के तम्बू में शरण लेनी पड़ी। वहां खड़े देश के जवानों ने हमारा अच्छा स्वागत किया। यहां सामने बहुत ऊंचाई पर घुमावदार कारगिल–लद्धाख रोड़ बहुत खूबसूरत

दिखाई देता है। इस पर लगातार भूस्खलन के कारण हरियाली नाम मात्र की है। मिलेट्री वालों ने बताया,

''इस स्थान पर एक महीने बाद बर्फ गिर जाने से हम लोगों का जीना मुश्किल हो जायेगा।''

हम कोई आधा घंटा वहां रुके तथा कई जानकारियां प्राप्त कर तम्बू नगरी बेस कैम्प पहुंचे। अरे, यहां तो बहुत बड़ा मेला लगा है। सरकारी तम्बू, किराये के निजी तम्बू, बहुत सारे लंगर और साथ ही काफी सारी दुकानें भी सजी हुई हैं। हमने पलंग वाला तम्बू 25 रू. प्रति पलंग में तय किया और सामान ले जा कर डाल दिये। खाने–पीने की व्यवस्था खूब है ही। बाजार में सामान भी खरीदा गया।

श्रीनगर

22–8–99 मंगलवार–रात टेन्ट में अच्छी नींद आई। मंजन आदि से निबट सामान उठाकर पहाड़ी से नीचे उतर आये। यहां बस स्टेण्ड है। एक टैक्सी 2400 रुपये में किराये पर मिल गई। शाम को पहलगांव पहुंचना है। सोनमर्ग व श्रीनगर भी देखते हुये जाना है। हम साथी टैक्सी में बैठ पहाड़ी दृश्यों का आनन्द लेते बढ़ लिये। रास्ते में एक स्थान पर नदी बह रही थी। टैक्सी रोक नदी के किनारे बैग लेकर चले गये। स्नान, मालिश के बाद नाश्ता जो हमारे बैगों में था ग्रहण किया। यहां प्रति एक फर्लांग पर एक मिलेट्री जवान (शायद बी.एस.एफ.) की ड्यूटी लगी हुई है। नदी किनारे खेल रहे स्थानीय बच्चों ने हमें परेशान किया। वे बार–बार हमारे सामानों के पास आते रहे और डांटने पर भी नहीं हटे। बिन बुलाये सड़क पर तैनात सुरक्षाकर्मी आ गया और उसने डांट–डपट कर बच्चों को इस तरह भगाया कि दुबारा लौटकर नहीं आये। हमने सुरक्षाबल के जवान को भी नाश्ता दिया। नहा धो पुनः यात्रा प्रारम्भ की। थोडी दूर एक मिलेट्री जवान ने हमें दो बोतल पानी की दी एवं कहा कि अगले मोड पर जो जगदीश शर्मा खड़ा है उसे दे देना। हमारी टैक्सी सीधी जगदीश शर्मा (सुरक्षाबल के जवान) के पास जाकर रुकी। ठेनुआं जी नीचे उतरे एवं उन्होंने कहा,

''आप जगदीश शर्मा''?

जवान एकदम चौंक पड़ा और असमंजस में पड़ गया। फिर हमने उसे दोनों बोतलें सौंपी और हंसते–हंसते विदा ली। सोनमर्ग का ग्लेशियर विश्व पर्यटन मानचित्र पर है। सोनमर्ग आने पर हमने ग्लेशियर पर जाने हेतु जानकारी प्राप्त की। वहां जाने हेतु परमिशन (अनुज्ञा) लेनी होती है। करीब तीन किलोमीटर पैदल भी चलना पड़ता है। हमने अनुज्ञा पत्र लेने हेतु पर्यटन विभाग के दफ्तरों की ओर गाड़ी मोड़ी। चार–पांच किलोमीटर वापस गये। रास्ते में मंथन हुआ और हम पुनः श्रीनगर की ओर चल दिये। हमें अभी साढ़े ग्यारह बज गये हैं। हम अमरनाथ यात्रा के थके हुये हैं। बारह बजे भी हम सोनमर्ग ग्लेशियर पर चढ़ना शुरू करेगें तो दो बजे पहुंचेगे। वहां हम एक घंटा रुक, एक घंटे में वापस पहुंचे तो भी हमें चार बज जायेंगे। फिर हमारा श्रीनगर देखना नहीं हो सकेगा। सब बातों पर विचार कर हमने सोनमर्ग देखने का इरादा छोड़ा। रास्ते में अच्छा दृश्य आने पर हमने दो जगह फोटो लिये। श्रीनगर से पूर्व ड्राइवर से कह दिया था कि पहले पेट पूजा करनी है। अतः उसने गाड़ी डलझील के किनारे वाले बाजार पर लगा दी। यहां से डल झील का विस्तृत दृश्य दिखाई दे रहा है। बहुत सारी नावें, शिकारे खड़े हैं। नाश्ते पानी के कई होटल हैं। यहां डल झील के किनारे पकौड़ी, मठरी आदि खाकर हमने पेट भरा। तेज धूप में, महंगे शिकारों में घूमने पर सम्मति नहीं बन पाई। समय का भी अभाव है। कुछ फोटो लिये व हम गाड़ी में बैठ मुगलगार्डन्स में से एक शालीमार बाग आ गये।

शालीमार बाग श्रीनगर की विश्व में पहचान बनाता है। बहुत विस्तृत क्षैत्र में इसका निर्माण किया गया है। इसके बीचों बीच एक जल धारा बहती है। बाग में अच्छी रौनक है। अभी यहां कई स्थानीय निवासी परिवार के साथ पिकनिक मनाने आये हुये हैं। सभी पर्यटन स्थलों की तरह यहां

भी फोटोग्राफर्स की भरमार है। हमने एक फोटोग्राफर से फोटो खिंचवाये। अपने कैमरे भी काम में लिये। यहां अशोक तनेजा ने कश्मीरी युवती की ड्रेस पहनकर शानदार फोटो खिंचवाया। क्लिनशेव तनेजा महिला पोशाक पहनने के बाद किसी भी तरह आदमी नहीं लग रहा था। हास्य का बहुत बढिया जरिया हमें मिल गया था। डेढ घंटा शालीमार बाग में बिता, हम निशात बाग चले गये। यहां हमने मात्र आधा घंटा ही खर्च किया। इसके बाद ड्राइवर हमें चश्मेशाही बाग ले गया। पता लगा यहां अन्दर जाने हेतु अनुमति लेनी पड़ती है। आम जनता के लिये यह बंद रहता है। हमने बाहर से ही इस बाग का मुआयना किया और अगली मंजिल की तरफ गाड़ी मोड़ दी। डल झील के किनारे बढ़ते हुये हम जवाहर गार्डन के पास स्थित शंकराचार्य मंदिर के गेट पर पहुंचे। श्रीनगर के बीचोंबीच डल झील के किनारे यहां एक रमणीक पहाड़ी है। इसकी चौटी पर शंकराचार्य जी ने शिव मन्दिर की स्थापना की थी। श्रीनगर के दर्शनीय स्थलों में यह अति प्रसिद्ध स्थल है और हिन्दु धर्मावलियों के लिये तो यह एक तीर्थ भी है। आतंकवाद के मध्य नजर इस प्राचीन मन्दिर पर अत्यन्त कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। गेट पर हम सब यात्रियों को जीप में से नीचे उतार कर जामा तलाशी ली गई। जीप में बांधे हमारे सामान, ड्राइवर तथा पूरी गाड़ी की मेटलडिक्टेटर से जांच की गई । एक घुमावदार लम्बा रास्ता जो पूर्णतया वृक्षाच्छादित है, तय कर हम मन्दिर की सीढ़ियों के नीचे पहुंचे। गाड़ी छोड़ने के बाद करीब 200 सीढ़ियां चढनी पड़ी। मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। प्रशासन द्वारा हरियाली एवं सड़क मार्ग तो विकसित किया गया है परन्तु मूल मन्दिर के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है। यहां विशाल शिवलिंग है। हमारे साथ अमरनाथ के अनेकों अन्य यात्री भी दर्शनार्थ आये है। अतः भीड़ हो गई है। भीड़ में बिहारी जवानों का एक दल भी है। वे भी हमारी तरह टाटा सूमो गाड़ी करके आये हैं। इन बिहारियों में राष्ट्रीय भावना बहुत ज्यादा है। उन्होंने हमें एक नागमन्दिर की जानकारी दी, जिसे यहां के आतंकियों ने बरबाद कर दिया है। उस मन्दिर पर एक पुजारी है। जो पचास हजार की अनंतनाग की आबादी में अकेला हिन्दु है। हमें यह आग्रह भी किया गया कि हम उस मन्दिर पर अवश्य जावें। समय की कमी, हम वहां नहीं जा सके।

शंकराचार्य मंदिर दर्शनोपरांत हम लालचौक गये। यह कोई पर्यटन स्थल नहीं है, पर यह कश्मीर का हृदय है। अक्सर लालचौक का नाम अखबार, टीवी में आता रहता है। भाजपा के मुरली मनोहर जोशी ने यहीं तिरंगा फहराने हेतु यात्रा निकाली थी। यह हमारे लिये राष्ट्रीय तीर्थ है। लालचौक घनी आबादी के बीच चौड़ी सड़क पर स्थित चौराहा है। सन् 1986 में मैं यहीं एक हिंदू धर्मशाला में रुका था तथा यहां एक जैन भोजनालय पर हमने खाना खाया था। लालचौक उतरते ही हमें कश्मीरी दुकानदारों ने आ घेरा। बाजार में तल मंजिल तथा प्रथम मंजिल पर कश्मीरी शॉल एवं कलाकृतियों की बहुत सी दुकानें हैं। हमें वहां जाना ही नहीं था। हमने यहां चार फोटो विभिन्न कोणों से खींचे। केले तथा पतासी खायी। फुटपाथ पर कुछ वस्तुओं के भाव कराये। एक कश्मीरी से मैंने पूछा,

''यहीं कहीं एक हिंदू धर्मशाला है ना?''

उम्मीद के मुताबिक उसने बड़ी तल्खी से जवाब दिया, ''जल जला गई वह तो कभी की।''

हमें बहुत बुरा लगा पर हम चुप रहे। ठैनुआं जी व दोनों अशोक एक गली में घुसकर टोपियों का भाव कराने लगे। दुकानदार ने पचास रुपये बताये व ठैनुआं जी ने पन्द्रह रुपये लगाये। अन्त में ठैनुआं जी तीस रुपये पर आ गये। दुकानदार थोड़े तोल–मोल के बाद तीस रुपये में टोपी देने को तैयार हो गया। अब ठैनुआं जी ने मना कर दिया। दुकानदार झगड़ा करने लगा। उसने जोर–जोर से बोल कर भीड़ इकठ्ठी कर ली।

'आपने पैसे लगाये है तो टोपी तो लेनी ही पड़ेगी'।

ठैनुआं जी भी जाट हैं, वे भी न लेने पर अड़ गये। झगड़ा बढ़ता देख अशोक तनेजा ने तीस रुपये निकाल कर दे दिये व टोपी ले ली। पंद्रह बीस मिनट बाद हम वापस गाड़ी में बैठ हमारी अगली मंजिल पहलगांव की ओर बढ़ गए। लालचौक जाने के बाद हमारे साथियों में विशेष जोश चढ़ आया। पूरे श्रीनगर शहर के रास्ते ''वन्देमातरम'', ''हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान; नहीं रहेगा पाकिस्तान'' जैसे नारे लगाये। 80 की स्पीड पर हमारी गाड़ी चल रही थी। फिर भी मेरे मन में

कोई अज्ञात भय था। मैं साथियों को बराबर चुप रहने एवं केवल धार्मिक नारे लगाने के लिये कहता रहा। पहलगांव पहुंचने से पूर्व हमने अनंतनाग में सुरक्षाबलों के एक लंगर में चाय नाश्ता किया।

ताज होटल पहलगांव

पहलगांव पहुंचते–पहुंचते सात बज गये। रास्ते में बातचीत में हमारा सामंजस्य बिगड़ गया। होटल में या लंगर में रुकने के मामले में आपस में गरमा–गरमी तक हो गई। सबने गुस्से में आकर लंगर में ही रुकना तय कर लिया। हम टैक्सी वाले को स्पष्ट नहीं बता सके और उसने हमें बस स्टेण्ड उतार दिया। हमने टैक्सी वाले को भुगतान कर विदा किया। फिर सब अनबोले से पैदल लंगर में आ गये। मैंने लंगर वालों को रसीद दिखाकर सामान ढूंढा। लंगर में सबने कुछ खाया पीया भी। यहां पास के मन्दिर पर हमें छड़ी मुबारक के दर्शन हुये। छड़ी मुबारक को अभी अमरनाथ जी जाना है। हमारा सौभाग्य है कि हम यात्रा की वापसी में ही सही, छड़ी मुबारक एवं उसके साथ चल रहे साधु संतों के दर्शन कर आशीर्वाद ले सके। लंगर में रुकने की व्यवस्था से हम संतुष्ट नहीं हो पाये और हमने वापस ताज होटल में ही रुकने का फैसला किया। अशोक तनेजा जाकर पिछली बार से भी कम रेट मात्र तीन सौ रूपये में दो कमरे बुक करवा आया। हम अपना सामान लंगर से होटल में लाये। हाड़ौती में कहते है, 'दांत्या खराब होते है।' हमारे बीच में विवाद होने से हमने व्यर्थ ही 2 किलोमीटर का चक्कर लगाया एवं सामान ढोये। 2–3 घंटे भी हमारे बेकार हो गये। खैर होटल में सामान जमाने के बाद निश्चिंतता हो गई। सभी व्यक्ति अपने अपने हिसाब से घूमने एवं खरीददारी करने निकल गये। हमारे साथियों ने पहलगांव से प्रातःकाल कटरा जाने हेतु टैक्सी भी कर ली जो मात्र 1850 रूपये में हो गई। हमने प्रातः जल्दी निकलने का निश्चय किया और रात साढ़े ग्यारह बजे सो गये।

तारीख 23/8/99 सोमवार हमारी नींद चार बजे ही खुल गई और साढ़े पांच बजे होटल से बाहर आ हम टैक्सी का इन्तजार करने लगे। कुछ साथी बाजार निकल गये और जो बचे उन्हें स्थानीय विक्रेताओं ने घेर लिया। केशर, कस्तूरी, अखरोट, बादाम, मालायें, फोटो आदि लिये दर्जनों लोग आ गये। देखो–समझो, और बहुत ज्यादा भावताव करके खरीदो। मैं तो यात्रा में कोई चीज नहीं खरीदता। केशर सस्ती लग रही थी पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। ठेनुआं जी मेरे साथ थे, उन्होंने भी शायद ही कोई चीज खरीदी हो। कोई साढ़े सात बजे हम होटल छोड़ सके। मुख्य कारण तो टैक्सी वाले का देरी से आना ही था। टैक्सी वाला सहयोगी प्रकृति का नहीं निकला। पूरे रास्ते उसने हमें कही स्नान हेतु नहीं रुकवाया। नाश्ता–खाना भी हम अपनी मनपसंद जगह नहीं कर सके। इसके विपरीत कल का टैक्सी वाला जो हमें बालटाल से पहलगांव लाया था हर तरह से हमारा सहयोग कर रहा था। वह जम्मू का डोंगरी राजपूत था तथा उसकी भावनाऐं कश्मीर व पाकिस्तान के बारे में बिल्कुल हमारी भावनाओं से मिलती थी। ड्राइवर भी सफर का मजा खराब कर सकते हैं, इस रास्ते हमारे साथ यही हुआ। सबसे पहले हम काजीगुण्डा बाजार में रुके। यहां हमने नाश्ता किया तथा काजू, बादाम गिरी, अखरोट आदि खरीदे। यहां एक बोर्ड लगा हुआ है।

'यह स्थान विश्व का सबसे बड़ा ड्राई फ्रूट्स उत्पादक क्षैत्र है।'

रास्ते में मैंने ड्राई फ्रूट्स की थैली खोल ली और हम सब साथी बादाम अखरोट चबाते हुये आये।

कटरा के लुटेरे

रामबन में करीब एक बजे हमने एक चश्मे पर स्नान किया तथा लंगर में खाना खाया। रास्ते में पत्नीटॉप 15 मिनट रुक 2–3 फोटो खींचे। दिन छिपने से पूर्व करीब पांच बजे ही हम कटरा पहुंच गये। टैक्सीवाले को पैसे दे विदा कर हमारे साथी होटल ढूंढने लगे। इतने में ही एक आदमी ने बताया कि पास ही दिल्लीवाले की धर्मशाला है जहां कोई चार्ज नहीं है। ठेनुआं जी धर्मशाला देख आये। अच्छी है। हमें क्या, अभी एक घंटे में फ्रेश होकर माताजी के दर्शन हेतु निकलना ही तो है। हमने अपने सामान उठा पहली मंजिल के कमरे में रख दिये। कमरे में एक गंदा सा कालीन बिछा हुआ था। टॉयलेट अटैच है, वह धर्मशाला सा ही गंदा है। हमने अपने बैगों से साबुन, तौलिया, चद्दर आदि सामान निकाले। निबटने के बाद एक–एक छोटा बैग रास्ते के लिये रख, आठ नग इसी धर्मशाला में पांच रूपये प्रति नग में लॉकर में जमा करवा दिये। अब धर्मशाला का व्यापारी अपने असली रूप में आया।

''आओ पूजा ले लो साहब।''

सबसे पहले अशोक तनेजा पूजा बंधवाने लगा। धीरे–धीरे पूजा का सामान 200 रूपये तक पहुंच गया। मैंने और ठेनुआं ने पूजा का सामान लेने से मना कर दिया। इतना बोझ लादकर ऊपर कौन ले जायेगा? कीमत तो यह ठेठ दरबार की ही लगा रहा है। धीरे–धीरे हमारे अन्य साथी भी पूजा न लेने या कम कीमत की लेने की बात करने लगे। गरमा–गरमी हो गई। अशोक करोल्या को मैंने पहली बार अत्यन्त उग्र रूप में देखा। गालियां निकालते उसने धर्म के नाम पर दुकान चलाने वाले से कहा

''थूक के चाट ले, तेने पहले कहा था कि चाहे दो रूपये की ही पूजा लेना। अब हमें लूटना चाहता है।''

खैर पारीक सा. व प्रेम जी तथा बाजार के अन्य दुकान वालों द्वारा बीच बचाव करने से मारपीट होने से बच गई। अन्त में उस धर्मशाला वाले ने हमारे से एक घंटे के किराये के बीस रुपये प्रति व्यक्ति के हिसाब से 160 रूपये लिये और हमारा सामान हमें वापस दे दिया। हम गुस्से से उबलते, गालियां निकालते सीधे पुलिस स्टेशन चले गये। पुलिस स्टेशन पास ही है। ठेनुआं जी ने अपना परिचय दिया तथा माताजी के व धर्मशाला के नाम पर इस तरह की लूट खसोट बंद करवाने का आग्रह किया। उन्होंने एस.पी. सा. से भी फोन पर बात की। अब रिपोर्ट लिखने की बारी आई। पुलिस वाला रोचनामचे में उर्दु में लिखने लगा। वह क्या लिख रहा है, और किस पर दस्तखत करवायेगा, हम नहीं जान पायेंगे। फिर बाद में गवाही देने कौन आता फिरेगा? रोजनामचे में रिपोर्ट लिखवाना रद्ध हुआ और हमने एक सादा कागज पर प्रार्थना पत्र दिया। तुरन्त दो पुलिस वाले हमारे साथ गये। हमारे युवा साथी बाजार में गालियां निकालते हुये पुलिस के साथ उस धर्मशाला रूपी लूटखाने में पहुंचे। सारा बाजार तमाशबीन बन गया। हमारे धर्मशाला पहुंचने से पूर्व ही वहां का स्टॉफ धर्मशाला छोड़ भाग गया। तीसरी मंजिल तक भी कोई नहीं मिला। पुनः आने की धमकी दे थाने वापस आये। ठेनुआं जी ने पुनः थाने में मौजूद सी.आई. से बात की। हमने आगे बढ़ माता वैष्णव देवी के दर्शन करने जाने का मानस बनाया। स्मरण रहे कि रवेन्द्र जी ठेनुआं बारां न्यायालय में मुख्य प्रतिलिपिकार के पद पर कार्यरत हैं।

हमारे साथ हुई घटना कोई नई नहीं है पर अमुमन यात्री पंगा नहीं लेना चाहते। तीर्थस्थलों पर जहां सेवा करने वाले बहुत हैं, वहीं सेवा के नाम पर मेवा लूटने वालों की भी कमी नहीं है। पूजा के सामान बेचने वालों की हजारों दुकानें लगी है। दो चार ग्राहक भी दिन भर में फंस गये तो भर गया दुकानदार का पेट। धर्म के नाम पर चौगुने तो हो ही रहे हैं। पूरे बाजार में करीब समान रेट हैं। मैंने तो माताजी को इसके पहले भी अगरबत्ती, प्रसाद व नारियल के अलावा कुछ नहीं चढ़ाया और न हीं आज चढ़ाने की इच्छा है। 251 रूपये की पूजा में दुकानदार बहुत सारे सामान देता है और मुझे पता है मन्दिर में जाकर उन सब सामानों का क्या होने वाला है। धर्म के नाम पर रुपये ही खर्च करने है तो भूखे को भोजन कराने, लंगर में दान देने में ज्यादा उपयोग हो सकता

है। पुलिस कार्यवाही के दौरान ही हमारे साथी पास का रामेश्वरम् होटल तय कर आये थे। नवनिर्मित होटल में छः पलंग वाला कमरा तीन सौ रुपये में ले लिया। अभी हमने मात्र सौ रुपये एडवांस दिये है। सामान रखने का कोई चार्ज नहीं है। होटल के क्लॉक रूम में सामान रख हम सभी साथी आगे की यात्रा पर बढ़ गये।

हमारे पास एक–एक कंधे पर लटकने वाले बैग थे जिसमें एक जोड़ी कपड़े तथा अत्यन्त आवश्यक सामान ही रखे हुये थे। लड़ाई–झगड़े के बीच के समय में हमने वैष्णवदेवी यात्रा रजिस्ट्रेशन पर्चियां ले ली थी। पारीक सा. ने चतर सिंह जी को 25/8/99 का जम्मू से कोटा का ट्रेन का टिकट भी कटरा के बुकिंग काउंटर से दिला दिया था। बाकी हम सात साथियों के 26/8/99 के वापसी के कंफर्म टिकट जम्मू से बड़ौदा के मिल गये थे। टिकट आदि की निश्चितता के बाद हमने एक होटल में जाकर भर पेट खाना खाया। आगे बढ़ने पर हमने बुर्जुग साथी चतर सिंह जी के लिये एक घोड़ा करवा दिया। हम सब भी थके हुये थे, अतः हमने अपने सामानों हेतु एक पिट्ठू कर लिया और यात्रा शुरू की।

माता के दरबार में

24/8/99 मंगलवार रात्रि साढे बारह बजे हम सात साथी अर्द्धकुंवारी में मिल गये। हमने चलते वक्त बिछुडने पर यहीं मिलने का निश्चय किया था। चतर सिंह जी हमें नहीं मिल पाये। शायद घोड़े वाला नहीं रुका। हम सात साथियों में से हंसराज गेरा को बुखार आ रहा था। पारीक सा. अर्द्धकुंवारी के पहले दर्शन कर चुके थे तथा प्रेम जी राठौर थकान व भारी भीड़ देखकर घबरा गये। इन तीनों साथियों ने अर्द्धकुंवारी मंदिर व गर्भजून के दर्शन न करने का निश्चिय किया तथा वहां कंबल निकलवाकर सो गये। बाकी हम चार साथी रात एक बजे गर्भजून दर्शन की पंक्ति में लग गये तथा भारी भीड़ के बीच पौने चार बजे दर्शन कर बाहर निकल सके। एक घंटा करीब और हमें फ्रेश होने व आराम करने में लगा। हमने हमारे तीनों साथियों को साथ लिया, कंबल जमा करवाये एवं वैष्णदेवी की आगे की यात्रा पर प्रस्थान किया।

अर्द्धकुंवारी से हाथीमत्था, सांझीछत तक सीधी चढ़ाई है। उस के बाद उतार आ जाता है। कुछ रुक–रुक कर बढ़ते हुये सात बजे करीब हम वैष्णवदेवी पहुंच गये। घोड़ा स्टेण्ड पर ही इंतजार करते हमें चतर सिंह जी मिल गये। इस तरह हम वापस आठ साथी हो गये। माता के दरबार में बने विशाल भवनों में से एक में जाकर हमने आठ पाटे रोके तथा वहां अपना सामान फैला दिया। प्रातःकाल दर्शनार्थी दर्शन कर जा चुके होते हैं। यह समय धर्मशाला भवन खाली होने का रहता है। दो दलों में जाकर हमने माता जी के चरणों से निकली शीतल जल की धारा से स्नान किया। यहां अब नल जैसे पाइप लगा कर नहाने की अच्छी जगह बना दी गई है। पानी ठंडा है, एकदम बर्फ जैसा। बहुत हिम्मत जुटानी पड़ती है नहाने में। हमें जल्दी भी नहीं थी। तेल, कंघा कर धुले कपड़े पहन करीब आठ बजे हम माताजी के दर्शनार्थ लगने वाली लाइन में लगे। अभी इतनी ज्यादा भीड़ नहीं है तथा हमारे ग्रुप का नम्बर निकल भी गया है। इसके अतिरिक्त अभी मंदिर व्यवस्थापकों ने सभी दर्शनार्थियों से–'बिना नम्बर भी दर्शन कर सकते हो', ऐसी अपील जारी कर रखी है। साढ़े नौ बजे हमें दर्शन हो गये। गुफा के अंदर हमें वही दस बीस सैंकड ही रुकने दिया गया। नियमानुसार पूजा सामग्री, नारियल आदि सब बाहर ही रखवा लिये गये। दर्शन के बाद हमें माताजी का खजाना प्रसाद रूप में दिया गया। वैष्णोदेवी ट्रस्ट ने चवन्नी के आकार के माताजी के नाम के सिक्के बनाकर रखे हैं। जो हर दर्शनार्थी को दिये जाते हैं। वापसी में हमें काउंटर से टोकन लेकर नारियल भी दिया गया। हमने चुन्नियां अपने–अपने सिर पर बांध ली। इस तरह हमारा माता वैष्णोदेवी के दर्शन करने का कार्य पूर्ण हुआ।

भैरोंघाटी

सभी अन्य तीर्थों की तरह यहां भी अनेक मंदिर बने हुये हैं। हमने उन सब मंदिरों पर भी दर्शन किये। एक गुफा में काफी नीचे जाने के बाद बना शिव मंदिर बहुत अच्छा लगा। यह बिल्कुल प्राकृतिक जगह है। हालांकि यहां आने में हमारा सांस फूल गया। इसके बाद भवन में आ, हमने पाटों पर ढक कर रखे हमारे सामान उठाये व वापसी यात्रा शुरू की। पास ही माता वैष्णोदेवी ट्रस्ट द्वारा संचालित अल्पाहार गृह में घुस गये। यहां हमने दही के साथ आलू के गर्मागर्म पराठे नाश्ते के रूप में ग्रहण किये। यहां बैठे–बैठे ही हमारा विचार भैंरो बाबा के दर्शन करने का बन गया। चतरसिंह जी को बिल्कुल थकान नहीं थी। उन्होंने वापसी यात्रा पैदल ही करने का मंतव्य जाहिर किया। हमने उनकी बात पर उनकी तारीफ की तथा उन्हें पैदल वापसी यात्रा पर रवाना कर दिया। हम बाकी साथ–साथ पैदल भैंरोघांटी की ओर बढ़ गये। हमारा विचार था कि हम चतरसिंह के करीब साथ ही या पहले कटरा पहुंच जायेंगे। थोड़ा आगे जाते ही प्रेम जी व पारीक सा. का भी विचार बदल गया। वे भी सीधे कटरा के रास्ते पर रवाना हो गये। चतर सिंह जी उनके काफी आगे निकल गये थे। उन्हें उम्मीद थी कि वे भी साथ हो जायेंगे पर ऐसा न हो सका।

हम पांच साथी भैंरोघांटी के रास्ते पर बढ़े। घोड़े वाले हमारे आगे–पीछे लग गये। हमने भी मनोरंजन, घुडसवारी तथा समय बचाने के लिहाज से पांच घोड़े, पचास रुपये प्रति घोड़े में कर लिये। जल्द ही हम भैंरोबाबा के मंदिर के सामने पहुंच गये। पर यह क्या? अत्यन्त सुखद आश्चर्य हुआ। चतर सिंह जी हमें यहां मिल गये। हमने पूछा ही। उन्होंने बताया,

''रास्ते में मेरे साथ एक यात्री आ रहा था। उसने कहा कि बिन भैंरो के दर्शन किये यात्रा पूर्ण नहीं मानी जाती। बस मैं उन्हीं के साथ चलकर यहां पहुंच गया।''

उन्होंने हमारे घोड़ों पर बैठकर आने पर भी आश्चर्य प्रकट किया। खैर हम पुनः छह साथी हो गये। आराम से दर्शन कर लौट चले। हमारे दो साथी पारीक सा. व प्रेम जी बिना भैंरोबाबा के दर्शन के हमारे से पूर्व रामेश्वरम् होटल पहुंच ही जायेंगे। हमने होटल की पर्ची रसीद तथा कमरे की चाबियां उन्हें दे ही दी थी। वे जाड़ेजा जी की चिन्ता अवश्य करेंगे। खैर अब जैसा होना है होगा।

उतार पर हम सब चपलता से आगे बढ़े। रास्ते में हम आपस में मिलते बिछुडते रहे। जहां जिसका मन लग जाये कुछ खाने पीने लग जाये। आखिर में हम सब को बाणगंगा पर मिलना था। मैं डेढ़ बजे बाणगंगा पर पहुंचा। वहां हम छः ही साथी मिल पाये। अशोक गर्ग, अशोक तनेजा, हंसराज तीनों बाणगंगा पर स्नान हेतु रुक गये। बाकी हम तीनों की इच्छा थकान के कारण आराम करने की हो रही थी। ठेनुंआ जी व मैं साथ–साथ होटल पहुंचे। कमरे के किवाड़ खुले हुये थे तथा दोनों बुर्जुग महानुभाव घोड़े बेचकर सो रहे थे। कमरे में हमारा सारा सामान सूटकेस आदि रखे थे। मुझे यह बात अखरी पर हम भी सो गये। थोड़ी देर बाद जड़ेजा जी भी आ गये। बाकी तीनों साथी काफी देर से आये। होटल का कमरे का दरवाजा खुला ही रहा। मुझे भी कहां होशोहवास था? रात भर की नींद और 28 कि.मी. की थकान। रात साढ़े आठ बजे करीब चौराहे पर स्थित होटल में पारीक सा. व अन्य साथियों के साथ खाना खाने गया। हमें सोने में रात के ग्यारह बज गये। इस कमरे में हमारे पास छह ही पलंग थे। अतः पारीक सा. ने सामने के होटल में एक डबलबेड कमरा सौ रुपये देकर किराये पर लिया। इस तरह हमारी रात आराम से गुजरी।

वापसी में जम्मू दर्शन

25/8/99 बुधवार आज क्या करना है, इसकी योजना हमने रात सोने से पूर्व ही बना ली थी। जड़ेजा जी का आज साढ़े ग्यारह बजे वाली सुपरफास्ट ट्रेन का जम्मू से कोटा का टिकट है। रात पारीक सा. व जड़ेजा जी दोनों अपने पूरे सामान ले जाकर सामनेवाले होटल में सो गये थे। आज प्रातः उन्हें जल्दी उठ जम्मू रेल्वे स्टेशन पहुंचना है। वहां जड़ेजा जी को ट्रेन में बिठाकर पारीक सा. हमें चिनार होटल में मिलेंगे। हम अपने हिसाब से जम्मू पहुंच जावेंगे। प्रातः पारीक सा.

व जड़ेजा जी अपने प्रोग्राम के मुताबिक चले गये होंगे। वे हमारे को नहीं मिले। हम छहों साथी आराम से साढ़े सात बजे सोकर उठे। मिलकर पास के होटल में जा इडली, डोसा आदि का नाश्ता किया। फिर हम पुलिस स्टेशन गये। वहां हमने परसों रात हमारे साथ हुई घटना तथा हमारे द्वारा पुलिस में की गई शिकायत पर हुई कार्यवाही के बारे में जानना चाहा। पुलिस ने अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की थी। अशोक तनेजा व ठेनुंआ जी ए. एस. पी. साहब से जाकर उनके दफ्तर में मिले तथा उन्हें पूरी घटना बताई। ए. एस. पी. साहब ने तुरन्त फोन कर सी. आई. को कार्यवाही का आदेश दिया। सी. आई. ने हमारे साथ तीन पुलिस जवान भेजे पर हमारे पहुंचने तक पुनः धर्मशाला वाला फरार हो गया। हमारे साथियों ने बहुत देर तक हंगामा किया। पूरे बाजार ने तमाशा देखा। अब पुलिस भी क्या करे? हम वापस आ गये। ठेनुंआ जी ने सी.आई. साहब से बहुत देर तक बातें की। सार यही था कि इस तरह की ठगी बंद होना चाहिये। हमने उसे एक सौ साठ रुपये दिये हैं। हमें रुपये नहीं चाहिये। सी. आई. से ठेनुंआ जी ने आग्रह किया कि आप उससे रुपये ले माता जी की दान पेटी में डलवा दें तथा आगे से यात्रियों के साथ ऐसा न हो ऐसी हिदायत उसे दें। हम आ गये। हमें वापस घर जाना है।

''बाज से कह दिया कौवे की चोंच से मांस छीनकर कुंऐ में डाल दे। क्या ऐसा संभव है? पुलिसवाले कुछ रुपये धर्मशाला वाले से खा जायेगें। बस।'' हमारे एक साथी ने टिप्पणी की।

कटरा में हमारा काम समाप्त हो गया था। होटल रामेश्वरम् वाले को दो सौ रुपये दिये तथा अपना सामान हाथ में उठा बस स्टेण्ड पर खड़ी जम्मू जाने वाली बस में बैठ गये। यात्री इतने कम थे कि बस भरने में एक घंटा लग गया। हम दो बजे जम्मू पहुंच पाये। कुलियों व दलालों ने हमें बस स्टैण्ड पर ही घेर लिया। हम चिनार होटल जाने की जगह दूसरे ही लॉज में रुक गये। मैंने होटल में सामान रखा एवं पारीक सा. को वादे के मुताबिक ढूंढने चिनार होटल की ओर बढ़ा। बाजार में ही पारीक सा. ने आवाज दे मुझे रोका। बहुत नाराज हुये।

''मैं तीन घंटे से चिनार होटल के बाहर बैठा इंतजार कर रहा हूं। जब आप लोगों ने वहां मिलने का वादा किया था तो वहीं आना चाहिये था न?''

पारीक सा. सोच रहे थे, हम ग्यारह बजे ही जम्मू आ गये होंगे पर जब मैंने उन्हें वास्तविकता बताई तो वे कुछ ठंडे हुये। यह एक सुखद संयोग ही था। माताजी की व बाबा की कृपा ही थी कि पारीक सा. व मैं इस तरह मिल सके। पारीक सा. ने कोई एक फर्लांग तेज गति से मेरा पीछा कर आवाजें दे–देकर मुझे रोका। खैर ईश्वर को धन्यवाद। पारीक सा. का सामान ले जाकर होटल में रखा व हम पुनः सात साथी एक साथ हुये।

हमारे पास आज का दिन फालतू है। आज हमने जम्मू शहर देखने का निश्चय किया। हंसराज गेरा को पुनः तेज बुखार चढ़ गया। उसका साला अशोक तनेजा उसे दिखाने हेतु डाक्टर के पास ले गया। इसी बीच हमारी बातचीत में अशोक तनेजा ने कहा,

''मैं जीजाजी को संभालता हूं। आप लोग अपने हिसाब से जम्मू घूम आओ। मैंने तो जम्मू शहर के सब दर्शनीय स्थान कई बार देख रखे हैं।''

इस तरह अब हम जम्मू घूमने वाले पांच ही साथी रह गये। हमने होटल के सामने जाकर फोटोग्राफर की दुकान से कैमरे में रील बदलवाई। इससे पूर्व हमारी रील श्रीनगर से पत्निटॉप तक खर्च हो गई थी। नई रील ले हमने ऑटो वालों से बात की। बात तय कर हम घूमने निकल पड़े। साढ़े तीन घंटे का कार्यक्रम पूरा ऑटो चालकों की इच्छानुसार रहा।

सबसे पहले हमने जामवंत गुफा देखी। बहुत लम्बी चौड़ी गुफा जिसमें अब मंदिर बना दिया गया है। अच्छी लगी। इसके बाद हम अमर पैलेस देखने गये। राजा महाराजाओं का प्राचीन स्थान। तवी नदी के किनारे स्थित खूबसूरत बाग बगीचों के बीच बना महल। यहां फोटो खींचने की इजाजत नहीं है। इसके बाद बाजार में ही स्थित कर्णेश्वर महादेव मंदिर गये। यह महाराज द्वारा बनाया विशाल शिव मंदिर है। एक ट्रस्ट द्वारा संचालित आधुनिक स्थान है। यहां कई विशाल शिवलिंग स्थापित हैं। इसके बाद हम बाहुफोर्ट के माता मंदिर गये। ऑटो वाले ने हमें पूर्व में ही बता दिया था कि माता जी के मंदिर पर दर्शन कर बाग ए बाहु में घूमते हुये इस गेट पर आना।

यहां ओटो खड़ा मिलेगा। काली माता मंदिर के बाहर आज मेला लगा हुआ है। हम मंदिर में गये। जूते मौजे बेल्ट बाहर ही उतरवा लिये गये। सुरक्षा की पूरी व्यवस्था यहां भी है। मेटल डिक्टेक्टर व जामा तलाशी के बाद ही अंदर घुसने दिया गया। दर्शनों पर ज्यादा कतार नहीं थी। दर्शन के बाद किले के बाहर आ बंदरों को चने डाले। यह माता मंदिर 'बाहु' नाम के किले के अंदर है। राज परिवार का आराध्य यह अत्यन्त प्राचीन मंदिर है। युद्ध कूच के पूर्व राज परिवार यहां पूजा कर बलि चढ़ा कर आशीर्वाद लेकर जाता था। बाहुफोर्ट हम राजस्थान वालों के हिसाब से बहुत छोटा किला है। यह नदी पर ही बना है। इस किले के बाईं ओर तवी नदी के किनारे–किनारे विशाल गार्डन बनाया गया है। इसे बाग–ए–बाहु नाम दिया गया है। हमारी जम्मू यात्रा में सबसे ज्यादा अच्छा हमें यही बाग लगा। यहां हमने बहुत समय गुजारा तथा फोटोग्राफी की। योजनानुसार बाग के मुख्य द्वार से बाहर निकले। कुछ ढूंढ़ने पर ऑटो वाले मिल गये। एक मिनट के सफर के बाद ही उन्होंने हमें नवदुर्गा मंदिर के सामने खड़ा कर दिया। यह आधुनिक मंदिर है। यहां दुर्गा के नौ स्वरूपों की स्थापना की गई है। जिसकी पूजा नवरात्रों में होती है। हमें इस स्वरूपों एवं पूजा के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। अतः हम जल्द ही वापस आ गये। ऑटो वाले से हमने गर्म पानी का झरना दिखाने हेतु कहा तो उसने कह दिया कि अभी वह बंद है। वहां जाने की इजाजत नहीं है। इसके बाद हमें कांच के मंदिर ले जाया गया। कांच का काम मूलतः राजस्थान की देन है। रंग बिरंगी इस तरह की मीनाकारी हमारे बारां के ही कई मंदिरों में हो रही है। यह भी आधुनिक बना मंदिर है। हम भगवान को प्रणाम कर ऑटो में बैठे एवं होटल आ गये।

शाम के साढ़े सात बजे थे। तनेजा एवं गेरा आराम कर रहे थे। गेरा का बुखार दवा देने के बाद उतर गया था। उसके बाद वे बाजार जाकर काफी सारी खरीददारी भी कर लाये थे। हमने भी कुछ देर आराम किया, फिर बाजार निकल गये। बाजार में काफी देर इधर–उधर घूमे, अखरोट आदि सामान खरीदे। रघुनाथ मंदिर दर्शन किये तथा भोजन किया। खरीददारी में हम सब साथी बिछुड गये और रात ग्यारह बजे तक अलग–अलग होटल पहुंचकर सोते गये।

26–8–99 गुरूवार आराम से सोये एवं तसल्ली से नहा धो होटल के बाहर निकले। आज हम सातों साथियों ने पूरी तसल्ली से रघुनाथ मंदिर के सभी देवी–देवताओं के दर्शन किये। प्रेमजी व पारीक सा. अपेक्षाकृत जल्दी ही होटल लौट आये थे। बाकी हम पांच साथियों ने मिल 27 किलो अखरोट बारां लाने हेतु खरीदे। अखरोट तीन कट्टों में पैक कराये थे। होटल आते–आते दस बजे गये। सामान पैक कर होटल खाली किया तथा तीन ऑटो रिक्शा कर रेल्वे स्टेशन पहुंचे। कंफर्म रिजर्वेशन टिकट हमारे पास में है। कुछ समय भी। छोले–भटूरे का नाश्ता किया। पूरा सफर आनन्दमय कटा। रात चार बजे कोटा पहुंचे। एक मिनी टेम्पों कर बस स्टेण्ड आ गये। बारां की बस तैयार मिली। सवा छः बजे बारां पहुंच गये। मैं 27/8/99 शुक्रवार को सुबह साढ़े छः बजे अमरनाथ एवं वैष्णोदेवी यात्रा से राजी खुशी लौट अपने घर में प्रवेश कर चुका था।